INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

(A comparative study of the school environment of students studying at the senior secondary level)

प्रतिभा यादव
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म.प्र.)
E-mail: pratibhagie4@gmail.com

डॉ. शालिनी पाण्डेय
प्रोफेसर,
शिक्षासंकाय जैन कॉलेज,
ग्वालियर (म.प्र.)
E-mail: dr.shalinidixit30@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/05.2026-29396748/IRJHIS2605018

सारांश :

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर केंद्रित है। अध्ययन हेतु कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 400 छात्र एवं 400 छात्राएँ सम्मिलित थीं। इनमें से 400 विद्यार्थी 10 शासकीय तथा 400 विद्यार्थी 10 अशासकीय विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किए गए। अध्ययन में डॉ. करुणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत विद्यालय वातावरण मापनी का प्रयोग किया गया, जिसके माध्यम से विद्यालयी वातावरण के छः आयाम–रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमेयता, अस्वीकृति एवं नियंत्रण का मापन किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु स्वतंत्र समूह ज–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि कुल विद्यालयी वातावरण के संदर्भ में छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यद्यपि, विद्यालयी वातावरण के आयामों में विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि रचनात्मक उत्तेजना तथा अस्वीकृति आयामों में छात्र–छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर विद्यमान है, जहाँ छात्राओं के लिए विद्यालय वातावरण अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल पाया गया। शेष आयामोंकृसंज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमेयता एवं नियंत्रण में छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

यह अध्ययन विद्यालयी वातावरण की लैंगिक समानता, शैक्षिक नीति निर्माण तथा विद्यालयी सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है और शिक्षकों एवं प्रशासकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

***मुख्य शब्द** : विद्यालयी वातावरण, उच्च माध्यमिक स्तर, छात्र–छात्राएँ, रचनात्मक उत्तेजना, अस्वीकृति, स्वीकृति, अनुमेयता, नियंत्रण एवं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय।*

प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास की आधारशिला मानी जाती है। विद्यालय वह प्रमुख संस्था है जहाँ विद्यार्थी न केवल औपचारिक ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, सामाजिक

व्यवहार एवं भावनात्मक संतुलन का भी विकास होता है। विशेष रूप से उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राएँ किशोरावस्था के संवेदनशील चरण में होती हैं, जहाँ विद्यालयी वातावरण उनके शैक्षिक एवं मानसिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। विद्यालयी वातावरण में भौतिक सुविधाएँ, शिक्षक–छात्र संबंध, अनुशासन व्यवस्था, सहपाठी समूह, प्रशासनिक सहयोग तथा शैक्षिक गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। विद्यालयी वातावरण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए मूज (Moos,1979) ने कहा है कि विद्यालय का सामाजिक–मनोवैज्ञानिक वातावरण विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, प्रेरणा तथा उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इसी प्रकार ब्लूम (Bloom, 1976) का मत है कि अनुकूल शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होता है, जबकि प्रतिकूल वातावरण उनके सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता है। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण केवल भौतिक संसाधनों तक सीमित न होकर एक समग्र अवधारणा है।

भारतीय संदर्भ में, उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्णयों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। इस स्तर पर विद्यार्थी बोर्ड परीक्षाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा करियर चयन के दबाव से गुजरते हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT2019) के अनुसार, यदि विद्यालयी वातावरण सहयोगात्मक, सुरक्षित एवं प्रेरक हो, तो विद्यार्थी तनाव को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर पाते हैं और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक वृद्धि होती है। विद्यालयी वातावरण में विद्यमान असमानताएँ, जैसे–विभिन्न विद्यालयों की संसाधन उपलब्धता, शिक्षण–अधिगम की गुणवत्ता तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण, छात्र–छात्राओं के अनुभवों में अंतर उत्पन्न करती हैं। यही कारण है कि विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। फ्रेजर (Fraser,1998) के अनुसार, विद्यालयी वातावरण का अध्ययन एवं तुलना करके शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार हेतु ठोस सुझाव दिए जा सकते हैं।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह शोध **"उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय पर केंद्रित है। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न विद्यालयी परिवेशों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं द्वारा अनुभव किए गए विद्यालयी वातावरण की प्रकृति का विश्लेषण करना तथा उनके मध्य विद्यमान समानताओं एवं भिन्नताओं को उजागर करना है। यह शोध न केवल शिक्षकों एवं प्रशासकों को विद्यालयी वातावरण सुधारने हेतु दिशा प्रदान करेगा, बल्कि नीति–निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

- **सिंह, मनीषा, श्रीवास्तव, नीलम और जोशी, किरण (2024)** उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 11–12 के 160 छात्रों को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक से चयनित किया गया। एस. पी. सिंह एवं ए. इमाम (2015) द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि खुला, आत्मनियंत्रित, परिवारात्मक और अन्य प्रकार के विद्यालय क्लाइमेट की धारणा में लिंग और अकादमिक स्ट्रीम (कला व विज्ञान) के स्तर पर सांख्यिक महत्व था, जबकि ग्रामीण–शहरी अंतर अप्रासंगिक था।
- **एडगरटन, ई. एवं मैकेकनी, जे. (2023)** ने छात्रों की विद्यालय पर्यावरण की धारणा और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों का अध्ययन किया। यह अध्ययन स्कॉटलैंड के पाँच माध्यमिक विद्यालयों के 441 छात्रों पर एक मात्रात्मक अध्ययन किया। उन्होंने छात्रों की विद्यालय वातावरण की धारणा और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध की जाँच की। छात्रों के उत्तरों को प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया और उनके शैक्षणिक परिणामों की तुलना स्थानीय प्राधिकरण के आँकडों से की गई। शोध में रिग्रेशन विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि स्कूल पर्यावरण की सकारात्मक धारणा उपस्थिति, सामाजिक–आर्थिक स्तर और लिंग सभी शैक्षणिक उपलब्धियों से सहसंबंधित थे।

- **ज्योति एवं देवी, शर्मिला (2022)** ने हरियाणा के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा–9) के 100 छात्रों (50 लड़के, 50 लड़कियाँ) पर यह अध्ययन आधारित है। विद्यालय शैक्षिक वातावरण सूची प्रयोग करके आँकड़े एकत्रित किए गए। विश्लेषण में पाया गया कि लड़कों तथा लड़कियों के क्लाइमेट की धारणा में अंतर नहीं था, लेकिन समग्र स्व–कल्याण में अंतर दर्ज हुआ। साथ ही, विद्यालयी वातावरण और अध्यात्मिक एवं भावनात्मक सुख–समृद्धि के बीच सकारात्मक सह–संबंध पाया गया।
- **लियू एट अल. (2022)** ने बीजिंग, चीन में 800 माध्यमिक स्कूल के छात्रों पर स्कूल वातावरण में बुलिंग और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया। शोध में पाया गया कि बुलिंग की घटनाओं को कम करने के लिए स्कूलों में सामाजिक – भावनात्मक शिक्षण कार्यक्रम प्रभावी हैं, जो छात्रों की मनोवैज्ञानिक भलाई को बढ़ाते हैं।
- **सारियोग्लान (2021)** ने इस्तांबुल, तुर्की मे 320 माध्यमिक स्कूल के छात्रों में शिक्षण अधिगम वातावरण के भौतिक, शैक्षिक और प्रेरक तत्वों को मापने के लिए प्रश्नावली का सत्यापन किया। अध्ययन में पाया गया कि सकारात्मक शिक्षक–छात्र संबंध और प्रेरक शिक्षण रणनीतियां छात्रों की शैक्षिक प्रेरणा और व्यवहारिक जुड़ाव को बढ़ाती हैं।

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11) के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

2- विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों (जैसे–रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमेयता, अस्वीकृति एवं नियंत्रण) के संदर्भ में छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएं निम्नलिखित हैं —

1- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11) के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नही होता है।

2- विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों (जैसे–रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमेयता, अस्वीकृति एवं नियंत्रण) के संदर्भ में छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नही होता है।

शोध की परिसीमाएं :

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ परिसीमाएं निम्नलिखित हैं–

1- यह अध्ययन केवल ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है, अतः इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण अन्य क्षेत्रों पर सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

2- अध्ययन में केवल कक्षा 11 के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है, जिससे अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त नहीं किए जा सके।

3- विद्यालयी वातावरण का मापन केवल डॉ. करुणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित मापनी के माध्यम से किया गया है अन्य मापनी के प्रयोग से भिन्न परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

4- अध्ययन में केवल लिंग के आधार पर तुलना की गई है; सामाजिक–आर्थिक स्तर, विद्यालय का आकार, शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात जैसे अन्य चरों को सम्मिलित नहीं किया गया।

5- यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसमें विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ उनके व्यक्तिगत अनुभव एवं मानसिक स्थिति से प्रभावित हो सकती हैं।

शोध विधि :

शोध की प्रकृति :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) पर आधारित है। इस शोध का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। चूँकि विद्यालयी वातावरण जैसी मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक संकल्पना का अध्ययन प्रत्यक्ष अवलोकन के बजाय मापनी के माध्यम से किया जाता है, अतः सर्वेक्षण विधि को इस अध्ययन के लिए उपयुक्त माना गया।

शोध का क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल से संबद्ध ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय हैं। अध्ययन को शहरी क्षेत्र तक सीमित रखा गया है, जिससे विद्यालयी वातावरण में संस्थागत भिन्नताओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

जनसंख्या :

इस अध्ययन की जनसंख्या में ग्वालियर शहर के मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के समस्त छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हैं।

न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु यादृच्छिक नमूना विधि (Random Sampling Method) का प्रयोग किया गया। कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

- 10 शासकीय विद्यालयों से 400 विद्यार्थी
  - 200 छात्र
  - 200 छात्राएँ
- 10 अशासकीय विद्यालयों से 400 विद्यार्थी
  - 200 छात्र
  - 200 छात्राएँ

इस प्रकार अध्ययन में कुल 400 छात्र एवं 400 छात्राओं को सम्मिलित किया गया, जिससे लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सके।

शोध उपकरण :

विद्यालयी वातावरण के मापन हेतु डॉ. करुणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत "विद्यालय वातावरण मापनी" का प्रयोग किया गया। यह मापनी विद्यालयी वातावरण के छः प्रमुख आयामों पर आधारित है, जिनके माध्यम से विद्यालय

के शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों का वैज्ञानिक आकलन किया जाता है। मापनी की विश्वसनीयता एवं वैधता पूर्व में स्थापित है, जिससे प्राप्त आँकड़ों की प्रामाणिकता सुनिश्चित होती है।

आँकड़ों के संग्रहण की प्रक्रिया :

अनुमति प्राप्त करने के पश्चात चयनित विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों को मापनी प्रशासित की गई। मापनी भरने से पूर्व विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश स्पष्ट रूप से समझाए गए तथा उनसे सत्य एवं निष्पक्ष उत्तर देने का अनुरोध किया गया। सभी प्रश्नावलियाँ पूर्ण होने के पश्चात एकत्र की गईं।

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण में अंतर ज्ञात करने के लिए माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) एवं आवश्यकतानुसार t–परीक्षण का उपयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण :

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से ग्वालियर शहर के मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा–11 के 800 विद्यार्थियों में 400 विद्यार्थी (200 छात्र एवं 200 छात्राएं) 10 शासकीय विद्यालयों से और 400 विद्यार्थी (200 छात्र एवं 200 छात्राएं) 10 अशासकीय विद्यार्थियों से यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किए गये। जिन पर डॉ करुणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत विद्यालय वातावरण मापनी को प्रशासित किया गया जिनसे प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 400 छात्र व 400 छात्राओं के विद्यालय वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन विद्यालय वातावरण के कुल 6 आयामों पर आधारित है अध्ययन में 400 छात्र व 400 छात्राओं के उत्तरों से प्राप्त परिणाम तालिका 1 में इस प्रकार प्राप्त हुए हैं–

तालिका–1 : 400 छात्र–400 छात्राओं के विद्यालय वातावरण और उनके आयामों पर प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा t-मूल्य

विद्यालय वातावरण के आयाम	लिंग				t-मूल्य	p-मूल्य	सार्थकता स्तर
	छात्र		छात्रायें				
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन			
रचनात्मक उत्तेजना	51.71	12.26	53.33	8.70	2.16	.031	.05 पर सार्थक
संज्ञानात्मक प्रोत्साहन	28.48	6.13	28.59	4.93	.298	.765	सार्थक नहीं
स्वीकृति	26.40	6.35	26.83	5.45	1.03	.302	सार्थक नहीं
अनुमेयता	25.66	6.11	24.89	5.05	1.92	.054	सार्थक नहीं
अस्वीकृति	21.28	7.30	17.69	6.39	7.39	.000	.01 स्तर पर सार्थक
नियंत्रण	25.58	6.18	26.42	6.17	1.91	.056	सार्थक नहीं

कुल विद्यालय वातावरण	180.33	32.41	177.30	25.32	1.47	.140	सार्थक नहीं

सारणीमान .05 – 1.96

.01 – 2.58

तालिका–1 के अवलोकन करने से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों के लिए विद्यालय वातावरण का मध्यमान 180.33 छात्राओं के लिए मध्यमान 177.30 की तुलना में उत्तम है इसी प्रकार विद्यालय वातावरण के आयामों–रचनात्मक उत्तेजना में छात्राओं का मध्यमान 53.33, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन में छात्राओं का मध्यमान 28.59, स्वीकृति में छात्राओं का मध्यमान 26.83, नियंत्रण में छात्राओं का मध्यमान 26.42, छात्रों के रचनात्मक उत्तेजना के मध्यमान 51.71, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन में छात्रों के मध्यमान 28.48 स्वीकृति में छात्रों के मध्यमान 26.40 और नियंत्रण में छात्रों के मध्यमान 25.58 से तुलनात्मक रूप से अधिक है जबकि विद्यालय वातावरण के आयाम अनुमेयता में छात्रों का मध्यमान 25.66, अस्वीकृति आयाम में छात्रों का मध्यमान 21.28 छात्राओ के अनुमेयता आयाम के मध्यमान 24.89 तथा अस्वीकृति आयामों में छात्राओं के मध्यमान 17.69 से तुलनात्मक रूप से अधिक है इस प्रकार के परिणाम बार चित्र में इस प्रकार प्रदर्शित है–

बार चित्र : विद्यालय वातावरण एवं उनके आयामों में छात्र–छात्राओं की स्थिति का तुलनात्मक बार चित्र।

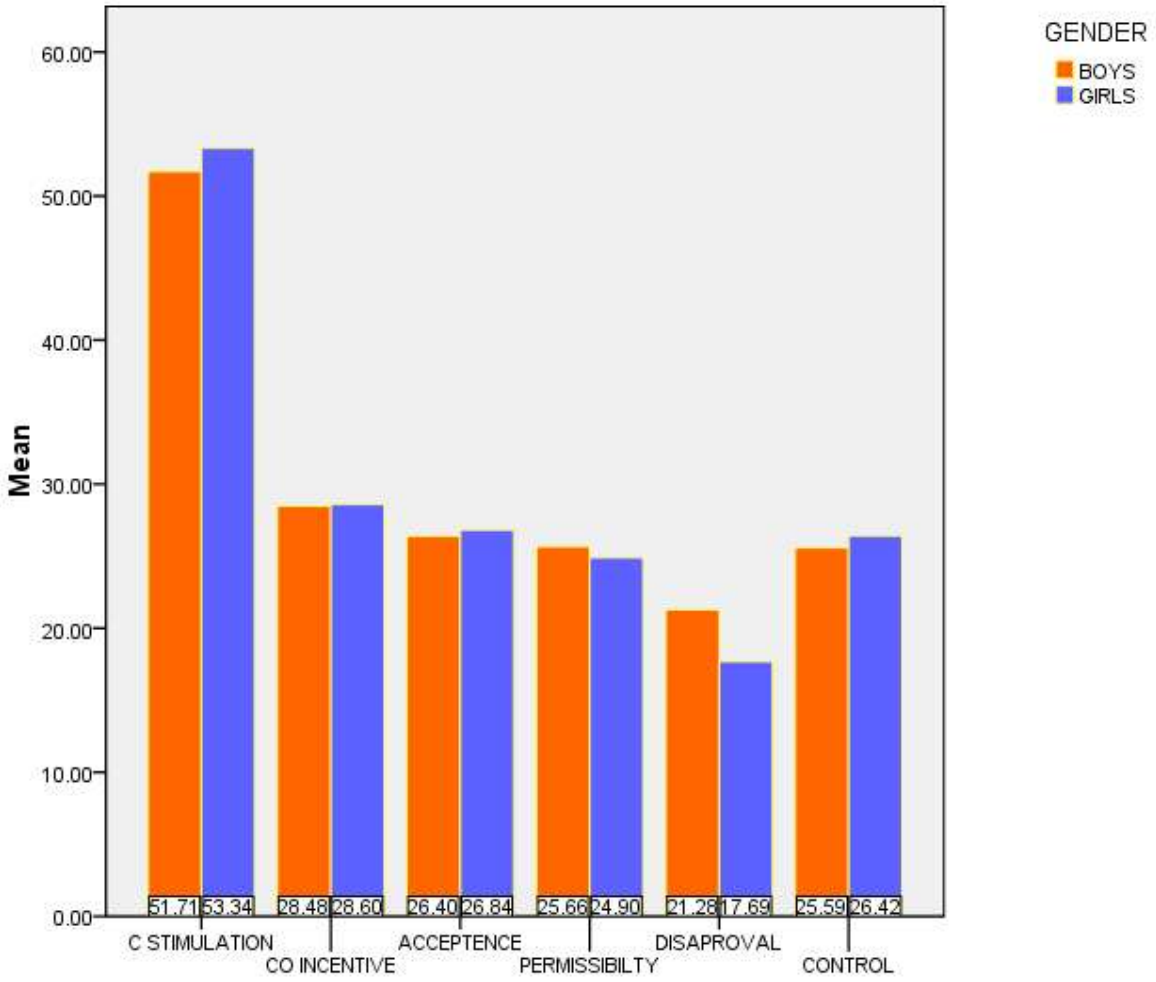

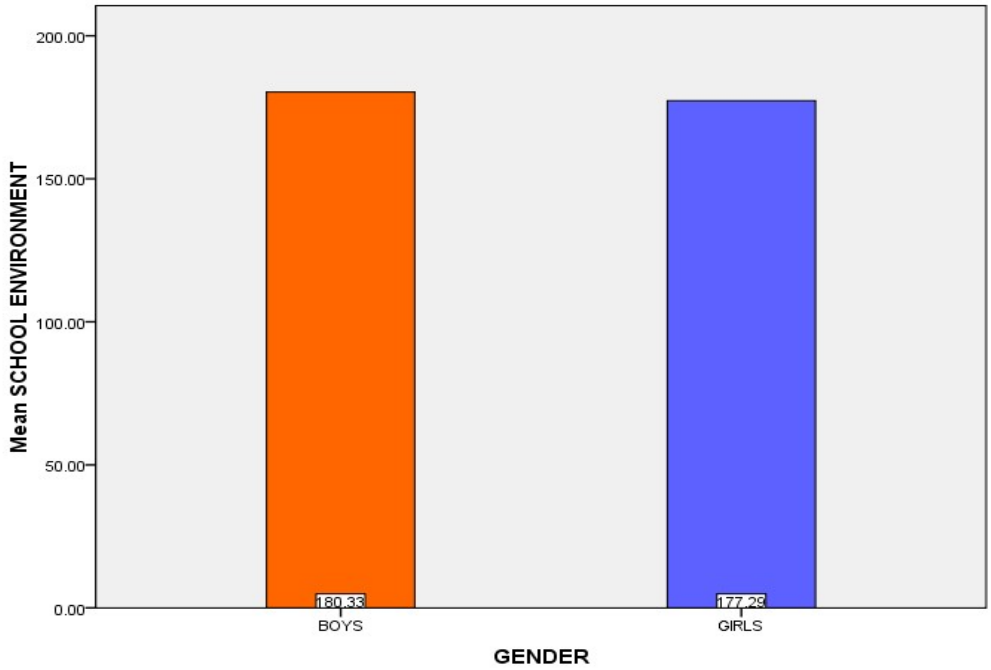

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से स्वतंत्र समूह t परीक्षण लगाया गया और t–मूल्य व p–मूल्य की गणना की गयी तालिका–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण में t–मूल्य का मान 1.47 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता के अंश 798 के आधार पर .05 स्तर पर 1.96 तथा .01 स्तर पर 2.58 सारणी मान से कम है जो दोनों सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर को प्रदर्शित नहीं करता है तालिका से यह भी स्पष्ट है कि p–मूल्य .140 जो .05 से अधिक है (.140>.05) यह भी सार्थक अंतर को प्रदर्शित नहीं करता है अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना **"उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की विद्यालयी वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा"** स्वीकृत की जाती है अतः छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जब छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालयी वातावरण के आयामों में तुलना की गई तो तालिका–1 के अवलोकन में पाया गया कि विद्यालय वातावरण के आयाम रचनात्मक उत्तेजना के लिए टी–मूल्य का मान 2.16 है जो स्वतंत्रता के अंश (df) 798 पर .05 सार्थकता स्तर सारणी मान 1.96 से अधिक है जबकि .01 सार्थकता स्तर सारणी मान 2.58 से कम है। इस आयाम के लिए p–मूल्य का मान .037 प्राप्त हुआ जो .05 से कम और .01 से अधिक है अतः रचनात्मक उत्तेजना में विद्यालयी वातावरण छात्र–छात्राओं के मध्य .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर को प्रदर्शित करता है अतः रचनात्मक उत्तेजना में विद्यालयी वातावरण छात्राओं के लिए छात्रों की तुलना में उत्तम है।

विद्यालयी वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन में छात्र–छात्राओं का t–मूल्य .298 (.298<1.96व2.58) एवं p–मूल्य .765 (.765>.05व.01), स्वीकृत आयाम में छात्र–छात्राओं का t–मूल्य 1.03 (1.03<1.96व2.58) एवं p–मूल्य .302 (.302>.05व.01), अनुमेयता आयाम में छात्र–छात्राओं का t–मूल्य 1.92 (1.92<1.96व2.58) व p–मूल्य .054 (.054>.05व.01) तथा नियंत्रण आयाम में छात्र–छात्राओं के लिए t–मूल्य 1.91 (1.91<1.96 व2.58) एवं p–मूल्य .056 (.056>.05व.01) प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 798 पर .05 तथा .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर को प्रदर्शित नहीं करता है अतः छात्र–छात्राओं के लिए संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमेयता और नियंत्रण आयाम में विद्यालयी वातावरण समान है। तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालयी वातावरण के आयाम अस्वीकृति छात्रों के लिए छात्राओं की तुलना में अधिक है जब छात्र–छात्राओं के लिए अस्वीकृत आयाम में वातावरण की तुलना हेतु टी–परीक्षण

लगाया तो t–मूल्य 7.39 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 798 पर .05 तथा .01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 तथा 2.58 से काफी अधिक है इस आयाम के लिए p–मूल्य .000 प्राप्त हुआ जो .05 से कम है।

अतः अस्वीकृति आयाम में छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालयी वातावरण के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात छात्रों के लिए छात्राओं की तुलना में कम है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालय वातावरण के आयाम–रचनात्मक उत्तेजना तथा अस्वीकृति में छात्राओं के लिए विद्यालय वातावरण उत्तम है जबकि संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमेयता, नियंत्रण आयाम में विद्यालयी वातावरण छात्र–छात्राओं के लिए समान है। छात्रों के लिए विद्यालयी वातावरण के आयाम–अस्वीकृति अधिक है अर्थात उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने और स्वायत्त व्यक्ति होने के अधिकार कम है जब हम छात्र–छात्राओं से कुल विद्यालयी वातावरण की तुलना करते हैं तो पाते हैं कि छात्र–छात्राओं के लिए विद्यालयी वातावरण में कोई अंतर नहीं है अर्थात समान विद्यालय वातावरण उपलब्ध है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं सांख्यिकीय परीक्षणों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष निकाले गए है :–

1- अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के कुल विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों के लिए विद्यालयी वातावरण लगभग समान स्तर का उपलब्ध है।

2- विद्यालयी वातावरण के रचनात्मक उत्तेजना आयाम में छात्राओं का मध्यमान छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया तथा टी–परीक्षण के परिणामों के अनुसार यह अंतर .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह संकेत मिलता है कि छात्राओं को विद्यालय में रचनात्मक अभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

3- संज्ञानात्मक प्रोत्साहन आयाम में छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि शिक्षण–अधिगम से संबंधित बौद्धिक अवसर दोनों वर्गों को समान रूप से उपलब्ध हैं।

4- स्वीकृति आयाम के संदर्भ में भी छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयी वातावरण में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में दोनों के प्रति समान व्यवहार अपनाया जा रहा है।

5- अनुमेयता तथा नियंत्रण आयामों में भी छात्र–छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका अर्थ है कि विद्यालयों में अनुशासन, नियमों एवं स्वतंत्रता का स्तर दोनों के लिए समान है।

6- अस्वीकृति आयाम में छात्रों का मध्यमान छात्राओं की तुलना में अधिक पाया गया तथा टी–परीक्षण द्वारा यह अंतर .01 सार्थकता स्तर पर अत्यंत सार्थक सिद्ध हुआ। इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों को विद्यालय में अपेक्षाकृत अधिक अस्वीकृति, प्रतिबंध एवं सीमित स्वायत्तता का अनुभव होता है।

7- समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यद्यपि कुल विद्यालयी वातावरण में छात्र–छात्राओं के मध्य कोई अंतर नहीं है, फिर भी कुछ विशिष्ट आयामों–विशेषकर रचनात्मक उत्तेजना एवं अस्वीकृति में लिंग के आधार पर अंतर विद्यमान है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं –

1- विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों को छात्रों के लिए अस्वीकृति की भावना को कम करने की दिशा में विशेष प्रयास करने चाहिए, ताकि वे स्वयं को अधिक स्वीकार्य, स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर अनुभव कर सकें।

2- छात्रों को निर्णय–निर्माण, नेतृत्व एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, जिससे उनके आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक वृद्धि हो सके।

3- विद्यालयों में छात्राओं के लिए उपलब्ध रचनात्मक अवसरों को बनाए रखते हुए, छात्रों के लिए भी समान रचनात्मक वातावरण विकसित करने की आवश्यकता है।

4- शिक्षकों को कक्षा में लोकतांत्रिक एवं सहायक वातावरण विकसित करना चाहिए, जिससे छात्र एवं छात्राएं बिना भय के अपनी बात रख सकें।

5- विद्यालयी नीतियों के निर्माण में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अनुशासन के नाम पर अनावश्यक नियंत्रण या अस्वीकृति न हो।

6- परामर्श सेवाओं (Guidance and Counseling) को विद्यालयों में प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों की भावनात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

7- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विद्यालयी वातावरण के विभिन्न आयामों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए, ताकि शिक्षक विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक पक्ष को बेहतर ढंग से समझ सकें।

संदर्भ :

1. Bloom, B. S. (1976). ***Human characteristics and school learning***. McGraw-Hill.
2. Moos, R. H. (1979). ***Evaluating educational environments***. Jossey-Bass
3. Fraser, B. J. (1998). Classroom environment instruments: Development, validity and applications. ***Learning Environments Research***, 1(1), 7–33.
4. Mishra, K. S. (2010). ***School environment inventory***. Agra: National Psychological Corporation.
5. Fraser, B. J. (2012). Classroom learning environments: Retrospect, context and prospect. In B. J. Fraser, K. Tobin, & C. McRobbie (Eds.), ***Second international handbook of science education*** (pp. 1191–1239). Springer.
6. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2014). ***Research in education*** (10th ed.). Pearson Education.
7. Wubbels, T., Brekelmans, M., den Brok, P., & van Tartwijk, J. (2015). An interpersonal perspective on classroom management. In E. T. Emmer & E. J. Sabornie (Eds.), ***Handbook of classroom management*** (pp. 159–180). Routledge.
8. Verma, B. P. (2017). ***Educational psychology***. Lakshmi Narain Agarwal.
9. Agarwal, R. (2018). ***Educational psychology***. Shipra Publications.
10. Singh, A. K. (2018). ***Tests, measurements and research methods in behavioural sciences***. Bharati Bhawan.

11. NCERT. (2019). ***Learning outcomes at the senior secondary stage***. National Council of Educational Research and Training.
12. Sarioğlan, M. (2021). Learning environments in compulsory secondary education: Validation of the physical, learning, teaching, and motivational scales. Learning Environments Research, 26(2), 200-215. https://doi.org/10.1007/s10984-021-09385-2
13. Jyoti, & Devi, S. (2022). Effect of academic climate on well being of secondary school students. Journal of Positive School Psychology, 6(8).
14. Liu, J., Peng, P., & Luo, L. (2022). The relation between school climate and bullying: A meta-analysis. Aggression and Violent Behavior, 62, 101678. https://doi.org/10.1016/j.avb.2021.101678
15. Edgerton E.$ Mckec hnie, J. (2023). The Relationship between students peruptions of their school environment and academic achievement. Frontier in Psychology,139org.
16. Singh, M., Srivastava, N., & Joshi, K. (2024). Enhancing senior secondary school students' success: dynamics of school climate. Educational Administration: Theory and Practice, 30(6), 4057–4070. https://doi.org/10.53555/kuey.v30i6.6323